

### **Note on Missing Data**

On compiling data regarding ISBN numbers, the National Book Council was unable to trace all the pertinent data relating to the ISBN numbers supplied to publishers and author-publishers by previous administrations. Therefore, the NBC is kindly soliciting publishers and author-publishers in receipt of the ISBN numbers listed below to provide the NBC with the basic details of their publications by informing Ms Sephora Francalanza at the NBC, email: [sephora.francalanza@gov.mt](mailto:sephora.francalanza@gov.mt).

Details should contain the following in this order: ISBN number, Title of Publication, Author or Editor, Year of Publication, name of Illustrator or Photographer (if any) and Printer.

|                   |                   |
|-------------------|-------------------|
| 978-99932-0-263-9 | 978-99957-0-002-7 |
| 978-99932-0-264-6 | 978-99957-0-004-1 |
| 978-99932-0-267-7 | 978-99957-0-007-2 |
| 978-99932-0-300-1 | 978-99957-0-008-9 |
| 978-99932-0-305-6 | 978-99957-0-009-6 |
| 978-99932-0-308-7 | 978-99957-0-011-9 |
| 978-99932-0-309-4 | 978-99957-0-012-6 |
| 978-99932-0-311-7 | 978-99957-0-015-7 |
| 978-99932-0-319-3 | 978-99957-0-016-4 |
| 978-99932-0-323-0 | 978-99957-0-019-5 |
| 978-99932-0-325-4 | 978-99957-0-021-8 |
| 978-99932-0-332-2 | 978-99957-0-026-3 |
| 978-99932-0-350-6 | 978-99957-0-027-0 |
| 978-99932-0-352-0 | 978-99957-0-028-7 |
| 978-99932-0-357-5 | 978-99957-0-031-7 |
| 978-99932-0-360-5 | 978-99957-0-032-4 |
| 978-99932-0-361-2 | 978-99957-0-038-6 |
| 978-99932-0-362-9 | 978-99957-0-042-3 |
| 978-99932-0-365-0 | 978-99957-0-044-7 |
| 978-99932-0-372-8 | 978-99957-0-045-4 |
| 978-99932-0-375-9 | 978-99957-0-057-7 |
| 978-99932-0-376-6 | 978-99957-0-060-7 |
| 978-99932-0-380-3 | 978-99957-0-062-1 |
| 978-99932-0-391-9 | 978-99957-0-063-8 |
| 978-99932-0-394-0 | 978-99957-0-065-2 |
| 978-99932-0-395-7 | 978-99957-0-071-3 |

978-99932-0-398-8  
978-99932-0-402-2  
978-99932-0-403-9  
978-99932-0-406-0  
978-99932-0-409-1  
978-99932-0-415-2  
978-99932-0-418-3  
978-99932-0-430-5  
978-99932-0-433-6  
978-99932-0-447-3  
978-99932-0-453-4  
978-99932-0-457-2  
978-99932-0-461-9  
978-99932-0-464-0  
978-99932-0-472-5  
978-99932-0-473-2  
978-99932-0-474-9  
978-99932-0-476-3  
978-99932-0-481-7  
978-99932-0-483-1  
978-99932-0-486-2  
978-99932-0-488-6  
978-99932-0-490-9  
978-99932-0-491-6  
978-99932-0-493-0  
978-99932-0-494-7  
978-99932-0-496-1  
978-99932-0-499-2  
978-99932-0-500-5  
978-99932-0-512-8  
978-99932-0-513-5  
978-99932-0-514-2  
978-99932-0-520-3  
978-99932-0-521-0  
978-99932-0-524-1  
978-99932-0-526-5  
978-99932-0-530-2  
978-99932-0-537-1  
978-99932-0-538-8  
978-99932-0-547-0  
978-99932-0-552-4  
978-99932-0-553-1  
978-99932-0-557-9  
978-99932-0-561-6  
978-99932-0-566-1  
978-99932-0-568-5  
978-99932-0-569-2  
978-99932-0-571-5  
978-99932-0-576-0  
978-99932-0-580-7  
978-99932-0-582-1

978-99957-0-072-0  
978-99957-0-074-4  
978-99957-0-077-5  
978-99957-0-078-2  
978-99957-0-080-5  
978-99957-0-086-7  
978-99957-0-088-1  
978-99957-0-089-8  
978-99957-0-090-4  
978-99957-0-091-1  
978-99957-0-097-3  
978-99957-0-099-7  
978-99957-0-100-0  
978-99957-0-105-5  
978-99957-0-106-2  
978-99957-0-107-9  
978-99957-0-111-6  
978-99957-0-112-3  
978-99957-0-113-0  
978-99957-0-116-1  
978-99957-0-117-8  
978-99957-0-121-5  
978-99957-0-122-2  
978-99957-0-123-9  
978-99957-0-124-6  
978-99957-0-126-0  
978-99957-0-127-7  
978-99957-0-128-4  
978-99957-0-130-7  
978-99957-0-133-8  
978-99957-0-135-2  
978-99957-0-136-9  
978-99957-0-138-3  
978-99957-0-139-0  
978-99957-0-140-6  
978-99957-0-141-3  
978-99957-0-142-0  
978-99957-0-143-7  
978-99957-0-144-4  
978-99957-0-145-1  
978-99957-0-146-8  
978-99957-0-147-5  
978-99957-0-148-2  
978-99957-0-149-9  
978-99957-0-150-5  
978-99957-0-152-9  
978-99957-0-153-6  
978-99957-0-154-3  
978-99957-0-155-0  
978-99957-0-156-7  
978-99957-0-157-4

978-99932-0-583-8  
978-99932-0-586-9  
978-99932-0-588-3  
978-99932-0-589-0  
978-99932-0-591-3  
978-99932-0-602-6  
978-99932-0-608-8  
978-99932-0-614-9  
978-99932-0-615-6  
978-99932-0-616-3  
978-99932-0-620-0  
978-99932-0-624-8  
978-99932-0-625-5  
978-99932-0-626-2  
978-99932-0-628-6  
978-99932-0-630-9  
978-99932-0-632-3  
978-99932-0-634-7  
978-99932-0-635-4  
978-99932-0-636-1  
978-99932-0-640-8  
978-99932-0-643-9  
978-99932-0-644-6  
978-99932-0-646-0  
978-99932-0-647-7  
978-99932-0-649-1  
978-99932-0-652-1  
978-99932-0-655-2  
978-99932-0-658-3  
978-99932-0-662-0  
978-99932-0-663-7  
978-99932-0-665-1  
978-99932-0-668-2  
978-99932-0-670-5  
978-99932-0-673-6  
978-99932-0-676-7  
978-99932-0-681-1  
978-99932-0-682-8  
978-99932-0-685-9  
978-99932-0-690-3  
978-99932-0-699-6  
978-99932-0-701-6  
978-99932-0-703-0  
978-99932-0-707-8  
978-99932-0-708-5  
978-99932-0-717-7  
978-99932-0-718-4  
978-99932-0-721-4  
978-99932-0-722-1  
978-99932-0-724-5  
978-99932-0-729-0

978-99957-0-158-1  
978-99957-0-159-8  
978-99957-0-161-1  
978-99957-0-163-5  
978-99957-0-170-3  
978-99957-0-171-0  
978-99957-0-173-4  
978-99957-0-179-6  
978-99957-0-180-2  
978-99957-0-181-9  
978-99957-0-183-3  
978-99957-0-186-4  
978-99957-0-187-1  
978-99957-0-189-5  
978-99957-0-190-1  
978-99957-0-194-9  
978-99957-0-195-6  
978-99957-0-196-3  
978-99957-0-205-2  
978-99957-0-213-7  
978-99957-0-214-4  
978-99957-0-219-9  
978-99957-0-220-5  
978-99957-0-221-2  
978-99957-0-222-9  
978-99957-0-223-6  
978-99957-0-224-3  
978-99957-0-227-4  
978-99957-0-228-1  
978-99957-0-229-8  
978-99957-0-230-4  
978-99957-0-231-1  
978-99957-0-233-5  
978-99957-0-237-3  
978-99957-0-238-0  
978-99957-0-239-7  
978-99957-0-240-3  
978-99957-0-243-4  
978-99957-0-244-1  
978-99957-0-246-5  
978-99957-0-247-2  
978-99957-0-248-9  
978-99957-0-249-6  
978-99957-0-250-2  
978-99957-0-251-9  
978-99957-0-252-6  
978-99957-0-253-3  
978-99957-0-254-0  
978-99957-0-255-7  
978-99957-0-256-4  
978-99957-0-257-1

978-99932-0-735-1  
978-99932-0-741-2  
978-99932-0-744-3  
978-99932-0-746-7  
978-99932-0-747-4  
978-99932-0-748-1  
978-99932-0-749-8  
978-99932-0-750-4  
978-99932-0-751-1  
978-99932-0-752-8  
978-99932-0-755-9  
978-99932-0-756-6  
978-99932-0-759-7  
978-99932-0-762-7  
978-99932-0-763-4  
978-99932-0-765-8  
978-99932-0-766-5  
978-99932-0-774-0  
978-99932-0-776-4  
978-99932-0-790-0  
978-99932-0-793-1  
978-99932-0-797-9  
978-99932-0-799-3  
978-99932-0-801-3  
978-99932-0-802-0  
978-99932-0-803-7  
978-99932-0-804-4  
978-99932-0-805-1  
978-99932-0-806-8  
978-99932-0-807-5  
978-99932-0-808-2  
978-99932-0-809-9  
978-99932-0-810-5  
978-99932-0-811-2  
978-99932-0-812-9  
978-99932-0-813-6  
978-99932-0-814-3  
978-99932-0-815-0  
978-99932-0-816-7  
978-99932-0-817-4  
978-99932-0-818-1  
978-99932-0-819-8  
978-99932-0-821-1  
978-99932-0-824-2

978-99957-0-258-8  
978-99957-0-259-5  
978-99957-0-263-2  
978-99957-0-265-6  
978-99957-0-267-0  
978-99957-0-268-7  
978-99957-0-280-9  
978-99957-0-283-0  
978-99957-0-284-7  
978-99957-0-287-8  
978-99957-0-290-8  
978-99957-0-291-5  
978-99957-0-292-2  
978-99957-0-294-6  
978-99957-0-295-3  
978-99957-0-296-0  
978-99957-0-298-4  
978-99957-0-301-1  
978-99957-0-302-8  
978-99957-0-304-2  
978-99957-0-306-6  
978-99957-0-307-3  
978-99957-0-308-0  
978-99957-0-309-7  
978-99957-0-310-3  
978-99957-0-311-0  
978-99957-0-312-7  
978-99957-0-313-4  
978-99957-0-315-8  
978-99957-0-318-9  
978-99957-0-319-6  
978-99957-0-321-9  
978-99957-0-325-7  
978-99957-0-326-4  
978-99957-0-334-9  
978-99957-0-338-7  
978-99957-0-344-8  
978-99957-0-345-5  
978-99957-0-348-6  
978-99957-0-349-3  
978-99957-0-351-6  
978-99957-0-355-4  
978-99957-0-358-5  
978-99957-0-361-5  
978-99957-0-362-2  
978-99957-0-364-6  
978-99957-0-365-3  
978-99957-0-370-7  
978-99957-0-374-5  
978-99957-0-375-2  
978-99957-0-376-9

978-99957-0-382-0  
978-99957-0-383-7  
978-99957-0-384-4  
978-99957-0-385-1  
978-99957-0-386-8  
978-99957-0-387-5  
978-99957-0-388-2  
978-99957-0-389-9  
978-99957-0-390-5  
978-99957-0-391-2  
978-99957-0-392-9  
978-99957-0-399-8  
978-99957-0-400-1  
978-99957-0-401-8  
978-99957-0-402-5  
978-99957-0-403-2  
978-99957-0-404-9  
978-99957-0-405-6  
978-99957-0-407-0  
978-99957-0-409-4  
978-99957-0-410-0  
978-99957-0-411-7  
978-99957-0-412-4  
978-99957-0-413-1  
978-99957-0-415-5  
978-99957-0-417-9  
978-99957-0-418-6  
978-99957-0-419-3  
978-99957-0-420-9  
978-99957-0-421-6  
978-99957-0-422-3  
978-99957-0-424-7  
978-99957-0-426-1  
978-99957-0-428-5  
978-99957-0-430-8  
978-99957-0-434-6  
978-99957-0-436-0  
978-99957-0-438-4  
978-99957-0-439-1  
978-99957-0-440-7  
978-99957-0-441-4  
978-99957-0-446-9  
978-99957-0-447-6  
978-99957-0-448-3  
978-99957-0-449-0  
978-99957-0-450-6  
978-99957-0-451-3  
978-99957-0-454-4  
978-99957-0-455-1  
978-99957-0-456-8  
978-99957-0-457-5

978-99957-0-460-5  
978-99957-0-461-2  
978-99957-0-462-9  
978-99957-0-463-6  
978-99957-0-466-7  
978-99957-0-469-8  
978-99957-0-470-4  
978-99957-0-473-5  
978-99957-0-475-9  
978-99957-0-476-6  
978-99957-0-479-7  
978-99957-0-485-8  
978-99957-0-488-9  
978-99957-0-489-6  
978-99957-0-491-9  
978-99957-0-492-6  
978-99957-0-495-7  
978-99957-0-496-4  
978-99957-0-499-5  
978-99957-0-500-8  
978-99957-0-502-2  
978-99957-0-504-6  
978-99957-0-508-4  
978-99957-0-511-4  
978-99957-0-512-1  
978-99957-0-513-8  
978-99957-0-514-5  
978-99957-0-515-2  
978-99957-0-516-9  
978-99957-0-517-6  
978-99957-0-520-6  
978-99957-0-522-0  
978-99957-0-523-7  
978-99957-0-524-4  
978-99957-0-525-1  
978-99957-0-526-8  
978-99957-0-528-2  
978-99957-0-532-9  
978-99957-0-533-6  
978-99957-0-537-4  
978-99957-0-539-8  
978-99957-0-540-4  
978-99957-0-541-1  
978-99957-0-542-8  
978-99957-0-544-2  
978-99957-0-546-6  
978-99957-0-550-3